

हज्ज का तरीका

हज्ज के प्रकार:-

हज्ज 3 प्रकार के है:-

- (1)- हज्ज खिरान।
- (2)- हज्ज तमत्तुअ।
- (3)- हज्ज इफराद।

(1)- हज्ज खिरान इस हज्ज को कहते हैं जिस में मीखात से हज्ज के महीनों में उमरा तथा हज्ज की नीयत को एक ही ँ हराम में जमा किया जाए।

हज्ज खिरान में उमरा करने के बाद बाल नहीं निकाले जाते बल्कि इसी प्रकार ँ हराम की स्थिति में रहती हैं एवजब हज्ज के दिन प्रारम्भ होते हैं तो इसी ँ हराम से हज्ज सपादन करते हैं।

(2)- हज्ज तमत्तुअ इस हज्ज को कहते हैं जिस में मीखात से हज्ज के महीनों में उमरे की नीयत से ँ हराम बाँधा जाता है तथा उमरे के मनासिक (ँक्ष) सपादन करने के बाद ँ हराम खुल जाता है फिर जब हज्ज के दिन शुरु होते हैं इस समय दुबारा हज्ज का ँ हराम बाँध कर हज्ज सपादन किया जाता है। ँ अधिकतर लोग हज्ज तमत्तुअ ही किया करते हैं।

(3)- हज्ज इफराद इस हज्ज को कहते हैं जिस में केवल हज्ज की नीयत से ँ हराम बाँधा जाता है एवजब हज्ज के मनासिक सपादन करने के बाद ँ हराम खोल दिया जाता है।

हज्ज के महीने:-

शव्वाल, ज़िल ख़अदा तथा ज़िल हज्जा के प्रारम्भ के 10 दिन हज्ज के महीने कहलाते हैं।

सहीह बुखारी, किताबुल हज्ज, बाब खौलिल्लाही तअालल हज्जु ँ शहूरन मअलूमात, में रिवाय है:-

लिप्यंतरण:- وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَشْهُرُ الْحَجِّ شَوَّالٌ وَذُو الْقَعْدَةِ وَعَشْرٌ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ

भाषांतर:- हज़रत ँ बदुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु तअाला ँ न्हु ने फरमाया: हज्ज के महीने: शव्वाल, ज़िल ख़अदा तथा ज़िल हज्जा के प्रारम्भ के 10 दिन हैं।

(सहीह बुखारी, किताबुल हज्ज)

हज्ज के दिन:-

हज्ज के 5 दिन व कालावधि है:-

8/9/10/11 और 12 ज़िल हज्जा।

हज्ज कि विशिष्टा व ँत्तमता:-

हज्ज के 3 फराइज़ (ँ ँरिहार्य व बाध्यकार) है:-

(1)- ँ हराम।

(2)- वुखूफ अरफात।

(3)- तवाफ जियारत।

(1)- □ हराम: इस से मुराद दिल से हज्ज की नीयत करना तथा तलबिय (लब्बैक) कहना है।

(2)- वुखूफ अरफात: 9 ज़िल हिज्जा को सूर्योदय के बाद से 10 ज़िल हिज्जा के सुबह सवेरे के बीच मैदान अरफात में कुछ देर के लिए क्यों ना हो ठहरना या वुखूफ, हज्ज का विशाल स्तम्भ है। सूर्यास्त के तुरन्त बाद वुखूफ का □ रक्ष करना, श्रेष्ठ है।

(3)- तवाफ जियारत: 10 ज़िल हिज्जा के सवेरे से 12 ज़िल हिज्जा के दिन, सूर्योदय होने से पूर्व तक किसी भी समय बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करना।

(टिप्पणी:-) इन तीनों □ रकान को तरतीब (नियमानुसार) के साथ समाप्त करना तथा हर स्तम्भ को इस के विशेष स्थान तथा निर्धारित समय में संपादन करना भी □ वश्य है इन तीनों फराइज़ में से यदि कोई चीज़ छूट जाए तो हज्ज नहीं होगा तथा इस की तलाफी (क्षतिपूर्ति) कुर्बानी □ दि से भी नहीं हो सकती।

हज्ज के वाजिबात

हज्जे के वाजिबात (□ निवार्यता) 6 है:-

(1)- वुखूफ मुजदलिफा: 10 ज़िल हिज्जा को सुबह सवेरे के बाद मुजदलिफा में वुखूफ करना, इस का □ तिम समय सूर्योस्त से पूर्व तक है।

(2)- सफा मरवह के बीच सई करना।

(3)- रमी जमार: गुरुवार को कक़डियां मारना।

(4)- हज्ज खिरान तथा हज्ज तमत्तु करने वालों के लिए कुर्बानी करना।

(5)- *हलखः* सर के बाद मुण्डवाना या *खसरः* बाल कतरवाना।

(6)- □ *फाखी* (मीखात से बाहर रहने वाले) के □ अधिकार में मक्के से वा□सी के □ वसर □र तवाफ विदाअ करना।

टिप्पणी:- इन वाजिबात में से यदि कोई वाजिब छूट जाए चाहे जानबूझकर या भूले से किया हो तो एक दम यथा एक बकरा कुर्बानी करना वाजिब (□ निवार्य) है।

हज्ज का प्रथम दिन:-

हज्ज का □हला दिन (यौमुल तरविय-)-

8 ज़िल हज्जा को फज़ की नमाज़ प्रिय मक्का में □ठ कर सूर्योदय के बाद *मीना* की ओर रवाना हों।

मीना:-

मीना □ावन मक्के से लगभग 5 किलोमीटर के □ स्तर □र 2 □र्वतों के बीच □□स्थित है।

(टिप्पणी:-) मीना की रवाणी के लिए वर्तमान काल में □ योजक की ओर से गाडी का प्रबन्ध होता है। हाजी लोग को इन की निवास स्थान (होटल) से गाड़ियों के द्वारा मीना □हुआया जाता है। □ अधिकतर गाड़िया□7 ज़िल हिज्जा की रात ही मीना रवाना हो जाती हैं इस लिए श्रेष्ठतर है के इशा की नमाज़ के बाद ही □ हराम बाँध लें। क्योँ के 7 ज़िल हिज्जा की रात रवाना होने में शरीअत के □ नुसार से कोई समस्या नहीं।

मीना जाते समय रास्ते (द्वार) भर तलबिय, दुरूद शरीफ एवंपदु ओमें व्यस्त रहें। जोहर से पूर्व मीना ँहुँ जाएतथा 8 ज़िल हिज्जा की जोहर, असर, मगरिब इशातथा 9 ज़िल हिज्जा की फज़ पूर्ण 5 नमाज़ें मीना में ँढना तथा वहीरात गुजारना सुन्नत है।

(टिप्पणी:-) मक्का ँहुँने के बाद से मीना की रवाष्ठी से पूर्व तक यदि 15 दिन हुए हैं तो हज्ज के सम्पूर्ण (4 रकात वाली) फज़ नमाज़ों में खसर करें।

मीना में मसजिद खैफ के खरीब ँढना मुसतहब (श्रेष्ठ) है वरना सुविधा के ँनुसार जहाँ मौक़ा हो ठहर सकत हैं। (राज्य सरकार की ओर से मीना में हाजी लोग के लिए खैमे लगाए जाते हैं, जिस ँर ँ योजक का नम्बर होता है। वहाँ भी निवास किया जा सकता है)।

मीना में सुविधा के ँनुसार रात भर तलबिय, इस्तेगफार एवंपदु एकरते रहें तथा दुरूद शरीफ कसरत से ँढें।

(टिप्पणी:-) मीना में यदि किसी कारण से खैमा मीना के हद के बाहर हो तो मीना के हद व सीमा में प्रवेश हो कर किसी ँचित स्थान ँर निवास करें।

हज्ज का दुसरा दिन:-

हज्ज का दुसरा दिन 9 ज़िल हिज्जा (यौमे अरफा)-

ँ ज हज्ज का महत्वपूर्ण दिन है जिस में हज्ज का विशाल व सर्वोत्तम स्तम्भ “बुखूफ अरफा” सपादन किया जाता है।

9 ज़िल हिज्जा को मीना में फज़ की नमाज़ ँढ लें, नमाज़ के बाद तकबीर तशरीख कहें।

तकबीर तशरीख ये है:-

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَ لِلَّهِ الْحَمْدُ

(लिप्यंतरण:-) □ ल्लाहु □ कबर □ ल्लाहु □ कबर ला इलाहा इल्लाहु वल्लाहु
□ कबर □ ल्लाहु □ कबर वलिल लाहिल हम्द।

(9 ज़िल हिज्जा की फज़ से 13 ज़िल हिज्जा की अ़सर तक प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 3 बार तकबीर तशरीख कहना सर्वश्रेष्ठ है।)

इस के बाद तलबिय (लब्बैक), ज़िक्र तथा दुरूद शरीफ में व्यस्त रहें।

सूर्योदय होने के बाद जब कुछ धूँ निकल □ ए तो मीना से अ़रफात की ओर रवाना हों।

वुखूफ अ़रफा:-

9 ज़िल हज्जा की ज़वाल के बाद 10 ज़िल हज्जा के सुबह सवेरे के बीच एक □ल के लिए भी अ़रफात में वुखूफ हो जाए तो हज्ज को रुकन व सतम्भ सपादन हो जाता है।

□रन्तु ज़वाल से सूर्योस्त तक अ़रफात में वुखूफ करना वाजिब (□ निवार्य) है। अ़रफात में बतन अ़रना के □ तिरिक्त जहाँ चाहें ठहर सकते हैं। किन्तु जबल के □र्वत के □ास वुखूफ करना सर्वश्रेष्ठ है।

तलबिय व ज़िक्र, दु□ व इस्तेगफार तथा चहारु कलिमा तौहीद □ढने में व्यस्त रहें।

जवाल से पूर्व खाने एवं न्य वश्यकता से मुक्त हो कर स्नान करें जो के मसनून (चित) है वरना वुजू कर लेना काफी है। इमाम के साथ मसजिद निमरह में नमाज़ ढ रहे हों तो जोहर व असर को एक ज्ञान और 2 इखामत के साथ सदान किया जाता है।

मसजिद निमरह के तिरिक्त अरफात में ढने स्थान र नमाज़ सदान कर रहे हों तो जोहर के समय जोहर एवं असर के समय असर ढें।

नमाज़ के बाद सूर्योस्त तक नम्रता व तजरअवजारी के साथ दुरूद शरीफ व जिक्र व दुआएकरते हुए वुखूफ करें।

सूर्योस्त (सूर्य समाक) होने के बाद अरफात से मुजदलिफा के लिए रवाना हो जाएतथा पूर्ण रास्ते में तलबिय, तकबीर व दुरूद शरीफ तथा दु ओका प्रबध करते रहें।

(टिपणी:-) मगरिब कि नमाज़ अरफात में या मुजदलिफा के द्वार में ढना श्रेष्ठ नहीं।

मुजदलिफा के मैदान में ढिम हद र मशअर हराम नामी र्वत के निकट ठहरना सर्वश्रेष्ठ है। वादी महसर में ना ठहरें एवना इस में से गुजरें।

मुजदलिफा ढुछ कर स्नान करना मसनून (श्रेष्ठ) वरना वुजू काफी है यदि मगरिब की नमाज़ का समय बाखी हो तब भी मगरिब हरगिज़ ना ढें।

जब इशाका समय प्रारभ हो जाए तब मगरिब और इशादोनों नमाज़ें एक ज्ञान तथा एक इखामत के साथ सदान की नीयत से ढें। मुजदलिफा

में मगरिब व इशाको इशाके समय जमा कर के ँढ ना वाजिब (ँ निवार्य) है।

जमात के साथ सँदान करना सर्वश्रेष्ठ है। मगरिब की फर्ज के साथ सुन्नत ना ँढें बल्कि इशाकी फर्ज ँढें इस के बाद प्रथम मगरिब की सुन्नत फिर इशाकी सुन्नत व वित्र ँढें।

मुजदलिफा में रात गुजारना सुन्नते-मौक़ेदा है। नमाज़ों के समाँन के बाद तलबिय, तकबीर, दुरूद शरीफ तथा तज़रअ वज़ारी के साथ दुँ ओँमें व्यस्त रहें। मुजदलिफा में सुबह सवेरे से ँजाला होने के बीच वुखूफ करना वाजिब है चाहे थोड़ी देर ही क्यों ना हों।

सूर्योदय तक वुखूफ करना सुन्नत है। तथा फज़ के नमाज़ प्रथम समय सँदान करना मुसतहब (श्रेष्ठतर) है।

मीना में 3 दिन रमी जिमार करने के लिए 70 कक़डियाँजो खजूर की गुठलियों से बड़ी ना हों तथा चने के दाने से छोटी ना हों। कुछ कक़डियाँ साथ रख लें।

हज्ज का तीसरा दिन- 10 ज़िल हज्जा

10 ज़िल हज्जा की सवेरे, जब सूर्योदय का विश्वास हो जाए तो मुजदलिफा से मीना के लिए रवाना हो जाएँतथा रास्ते में दस्तूर के ँनुसार ज़िक्र व दुँ एँव इस्तेगफार व तलबिय जारी रखें तथा दुरूद शरीफ को कसरत से ँढें।

10 ज़िल हज्जा का दिन हाजी लोग के लिए ँत्यन्त ँरिश्रमी व कार्यरत दिन है। इस लिए हाजियों के लिए नमाज़ ईद नहींँरखी गई है। मीना

□हृषते ही प्रथम कर्म रमी करना है केवल जमरह अखबह (बड़े शैतान) की रमी करें जमरह अखबह □र □हली ककडी मारनी से प्रथम ही तलबिय रोक दें।

रमी करने का मसनून (निर्धारित) व मुसतहब (श्रेष्ठतर) समय सूर्योदय से जवाल तक है। ऐच्छिक (मुबाह) समय जवाल से सूर्योदय तक है। तथा सूर्योदय से सुबह सवेरे तक मकरुह समय है यथा जवाल से पूर्व रमी करना मुसतहब (श्रेष्ठतर) है। जवाल के बाद से सूर्योदय तक करना जाइज (शास्त्रानुसार) है। एव□सूर्योदय (भोर) के बाद सुबह सवेरे तक करना मकरुह (निषिद्ध) है।

दुसरा काम कुर्बानी है: हज्ज इफराद करने वालों □र हज्ज की कुर्बानी वाजिब (□ निवार्य) नही□बल्कि मुसतहब (श्रेष्ठतर) है।

हज्ज खिरान एव□हज्ज तमत्तुअ करने वाले लोग कुर्बानी करना वाजिब (□ निवार्य) है।

तीसरा काम हलख या खसर: खसर (बाल कतरवाने) के समान हलख (सर मुण्डवाना) सर्वश्रेष्ठ है। इस का समय 10/11/12- ज़िल हिज्जा है। किन्तु 10 ज़िल हिज्जा को करवाना सर्वश्रेष्ठ (□ फज़ल) है।

जमात के समय क़िबले रुह बैठना तथा दायें दाहिनी ओर से शुरु करना सुन्नत है। हलख करवाने के बाद □ हराम खोल दें।

(टिप्पणी:-) रमी, कुर्बानी तथा हलख में तरतीब □ वश्य है। यदि प्रथम हलख करवाकर बाद में कुर्बानी दी जाए तो दम वाजिब होगा।

रमी, कुर्बानी तथा हलख के बाद तवाफ ज़ियारत के लिए मक्का के लिए रवाना हो जाएँ। तवाफ ज़ियारत करने के अनुसार वस्त्र में सजादन करें। यदि प्रथम सई ना की हो तो इस तवाफ के बाद सई कर लें इस तवाफ में रमल भी करें। यदि सई प्रथम कर चुके थे तो फिर इस तवाफ में रमल ना करें।

तवाफ ज़ियारत का समय 10 ज़िल हिज्जा की सुबह सवेरे से 12 ज़िल हिज्जा के सूर्योस्त तक है। किन्तु 10 ज़िल हिज्जा को तवाफ करना फ़जल (सर्वश्रेष्ठ) है।

हरम शरीफ से वापिस हो कर रात मीना में गुज़ारें क्योंकि रात मीना में गुज़ारना मसनून (निर्धारित) है।

हज्ज का चौथा दिन- 11 ज़िल हिज्जा

11 ज़िल हिज्जा के दिन तीनों जमरात की रमी करना है। प्रथम 7 कक़डियाँ छोटे शैतान को मारें। रमी के बाद कुछ गे बढ जाएँ और क़िबले की ओर हाथ ठाकर दुआ करें।

हुज़ूर क़लबी के साथ हम्द व सलात तथा इस्तेग़फ़ार व दुआ में यदि सख़ोग हो तो (कम से कम 20 क़ुरानी यतें ढने के समय तक, वरना सुविधा के अनुसार) व्यस्त रहें।

इस के बाद बीच के शैतान को 7 कक़डियाँ मारें तथा तहमीद, तहलील, तकबीर, दुरूद शरीफ तथा दुआ में इतनी ही देर व्यस्त रहें।

फिर उखबह (बड़ा शैतान) की रमी करें इसके बाद रमी करना नहीं है इस लिए रमी के बाद ना ठहरें और ना दुआ करें बल्कि गे बढ जाएँ।

रमी का ँचित समय ज़वाल से सूर्योस्त तक है तथा सूर्योस्त से सुबह सवेरे बिना तकलीफ करें तो कराहत (ँ नुचित व ँ नुँयुक्त) के साथ जाइज़ है। तथा कोई इज़र के कारण रात में ही करें तो मकरुह (निषिद्ध) नहींँहै।

हज्ज का ँँचवा दिन- 12 ज़िल हिज्जा

12 ज़िल हिज्जा के दिन ग्वारहवीँके प्रकार ज़वाल के बाद इसी तरतीब से तीनों जमरात की रमी करें (जमरह औला व प्रथम को 7 कक़डियाँतथा जमरह वसती को 7 कक़डिया तथा फिर जमरह इखबह को 7 कक़डिया मारें)।

इसके बाद सूर्योस्त से पूर्व मक्का चले जाएँतो कोई समस्या नहींँ ँ तँ ँचित यह है के 13 तारीक़ को रमी कर के जाएँतथा सूर्योदय हो जाएँतो फिर 13 ज़िल हिज्जा की रमी किए बिना जाना मकरुह है। और 13 ज़िल हिज्जा की सवेरे मीना में हो जाए तो फिर तेरहवहीँकी रमी करना वाजिब (ँ निवार्य) है।

रमी किए बिना जाना जाइज़ नहींँ इस स्थिति में तेरहवीँके दिन भी इसी तरतीब तथा इसी तरीक़े से तीनों जमरात की रमी करें (जमरह प्रथम व औला को 7 कक़डियाँतथा जमरह वसती को 7 कक़डिया तथा फिर जमरह इखबह को 7 कक़डिया मारें)।

इस रमी का समय सवेरे से मगरिब तक है किन्तु ज़वाल के बाद समय ँचित व मसनून है।

तवाफ़ विदाँ

तवाफ विदाअ ँ फाखी (मीखात के बाहर से ँ ने वाले) के लिए ँ निवार्य व वाजिब है।

सर्वश्रेष्ठ व ँ ँजल यह है के वापिसी के समय तवाफ विदाअ की नीयत के साथ तवाफ किया जाए। इस तवाफ में ना इजतेबाअ है और ना रमल। इस प्रकार इसके बाद सई करना भी नहीं॥ तवाफ के बाद नीयम के ँ नुसार 2 रकात नमाज सपादन करें।

मुलतमीज से चिमट कर खूब दुआ करें। कअबे के दरवाजे ँर कअबे का गिलाफ को ँकड कर तजरअ वजारी के साथ दुआ करें। इबराहीम के स्थान तथा जमजम के ँस ँ कर दुरुद शरीफ की कसरत करें।

फिर जो चाहें लोक व ँरलोक (सझार व ँ खिरत) की कृपा के लिए गिड गिडा कर दुा एकरें।

तवाफ विदाअ के ँ वसर ँर बैतुल्लाह शरीफ से जुदाई ँर दिल में दुःख व राज व मलाल की कैफियत पैदा करें। ँ सू व ँ खों से कअबा शरीफ कि ओर ँ त्यन्त ँत्सुकता की निगाह से देखते हुए दुबारा ँस्थिति की इच्छा व कामना तथा ँ भिलाषा के साथ ँ दर व सम्मान के लिए ँलटे ँर चल कर हरम शरीफ से बाहर निकलें।

पावन रौजे सरकार ँक सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि वसल्लम की जियारत स्वीकृत हज्ज की प्रमाणक तथा शफाअत (ँ नुनय) की सुरक्षा है।

सरकार ँक सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि वसल्लम ने ँ देश फरमाया: ”من

” | ”زار قبری وجبت له شفاعتی”

भाषांतर:- जिस ने मेरे (सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि वसल्लम) ँवित्र रौजे ँर
ँस्थिति की इस के लिए मेरी (सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि वसल्लम)
शफाअत वाजिब व ँ निवार्य हो गई।

ँ थिक फरमाया: (लिप्यंतरण:-) ”من حج ولم يزرني فقد جفاني“

भाषांतर:- जिस ने हज्ज किया और मेरी (सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि
वसल्लम) ज़ियारत ना की निस्सवेह इस ने मुझ (सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि
वसल्लम) ँर ँ त्याचार किया है।

ँ ल्लाह तआला सब को ँने हबीब ँक सल्लल्लाहु तआला ँ लैहि
वसल्लम के बतलाए हुए तरीके के ँनुसार हज्ज व उमरे के मनासिक
सआदन करने तथा ँवन ज़ियारत के शिष्टाचार व सभ्याचार समाउन करने
की मार्गदर्शन प्रदान करें।